IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आर्थिक विकास में महिलाओं की भूमिका : बिहार राज्य के विशेष संदर्भ में

मनीष कुमार, (एम ए, एम फिल)
पीएचडी शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग,
महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार।

सारांश : किसी भी लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में सरकार की नीतियों एवं कार्यक्रमों का सफल संचालन अर्थव्यवस्था की स्थिति पर निर्भर करती है। सुदृढ़ अर्थव्यवस्था के अभाव में सरकार द्वारा अपनी कल्याणकारी नीतियों एवं उद्देश्यों को प्राप्त करना कठिन हो जाता है। सरकार की रणनीतियों एवं योजनाओं का उद्देश्य जनकल्याण के साथ–साथ देश एवं राज्य का संपूर्ण विकास करना होता है। इसमें सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक विकास जैसे सभी क्षेत्रों पर सरकार द्वारा ध्यान दिया जाता है। परंतु आर्थिक विकास के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों का विकास भी अर्थव्यवस्था के अनुसार प्रभावित हो सकता है। अतः किसी भी राज्य या क्षेत्र का विकास सिर्फ राज्य के क्षेत्रफल या किसी जाति–वर्ग के विकास का परिणाम नहीं होता है। इसके लिए सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक, आदि विभिन्न क्षेत्रों के विकास की आवश्यकता होती है। इसके तहत यह कहा जा सकता है कि देश दुनिया की आंधी आबादी अर्थात महिलाओं को दरकिनार कर किसी राज्य अथवा देश का विकास संभव नहीं है । पुरुष एवं स्त्री समाज के दो पहिये हैं। केंद्र एवं विभिन्न राज्यों की सरकारों के द्वारा अपनी रणनीतियों एवं योजनाओं के माध्यम से महिला सशक्तीकरण के साथ महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण पर भी ध्यान दिया जाता है। महिलाओं की आर्थिक उन्नति को हम अनदेखा नहीं कर सकते हैं क्योंकि इसके बिना किसी देश या राज्य की आर्थिक उन्नति संभव नहीं है। आज महिलाएं देश के विभिन्न क्षेत्रों में अपना योगदान दे रही है जिसका प्रभाव देश या राज्य के शैक्षणिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक ढांचे के साथ आर्थिक ढांचे में भी दृष्टिगत होता है। अतः समाज में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी आर्थिक विकास को बढ़ावा देती हैं।

इस शोध आलेख में हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि, महिलाएं किस प्रकार देश या राज्य के आर्थिक विकास में अपना योगदान दे रही हैं? क्या महिलाओं की सामाजिक सक्रियता आर्थिक विकास को प्रभावित करती है? अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी एवं भूमिका को सुनिश्चित करने के लिए सरकार द्वारा किस प्रकार के कदम उठाए गए हैं अथवा उठाए जा सकते हैं? महिला सशक्तीकरण से अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

मुख्य शब्द : आर्थिक विकास, महिला सुरक्षा, आर्थिक जागरूकता, आर्थिक सशक्तिकरण, महिला रोजगार, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, मुद्रा योजना, महिला उद्यमी।

परिचय

वर्तमान राज्य अथवा आधुनिक राज्य एक लोक कल्याणकारी राज्य है जो सभी नागरिकों को व्यापक सामाजिक सेवाएं प्रदान कर कमजोर वर्गों का संरक्षण करता है और आर्थिक एवं सामाजिक सुरक्षा उपलब्ध कराता है। वर्तमान परिदृश्य में सरकार की भूमिका एवं कार्यप्रणाली में बदलाव के साथ–साथ देश एवं राज्य के विभिन्न क्षेत्रों के विकास में लोगों की भागीदारी एवं भूमिका में भी बदलाव देखने को मिलता है। जहां सरकार अपनी विकासात्मक रणनीतियों एवं योजनाओं के माध्यम से आर्थिक विकास को गति देने का कार्य कर रही है, वहीं आधी आबादी के रूप में महिलाएं भी निजी उद्यम, लघु एवं कुटीर उद्योग एवं विभिन्न विभागों में नौकरियों के माध्यम से आर्थिक विकास में सरकार का सहयोग कर रही हैं। ऐसा माना जाता है कि आर्थिक रूप से निर्णय लेने में स्वतंत्र एवं आत्मनिर्भर महिलाएं आर्थिक–सामाजिक दृष्टिकोण से सशक्त होती हैं और उन्हें सम्मानपूर्ण जीवन प्राप्त होता है।

वर्तमान में, देश के विभिन्न क्षेत्रों में महिला उद्यमियों की संख्या बढ़ी है और महिला उद्यमी आगे बढ़कर काम करने लगी हैं जो बदलाव के लिए जरूरी है। महिलाएं न केवल व्यवसाय और उद्योग बल्कि इंजीनियरिंग के क्षेत्र में भी अपना परचम लहरा रही है। बिहार स्टार्टअप योजना, स्टार्टअप इंडिया और प्रधानमंत्री मुद्रा योजना जैसी योजनाएं महिलाओं की आर्थिक उन्नति में काफी मददगार साबित हो रही हैं जिससे वे एक उद्यमी के रूप में भी देश की अर्थव्यवस्था में अपना योगदान दे रही है। इस प्रकार आर्थिक विकास में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। इसके अलावा वह आर्थिक एवं सामाजिक विकास के साथ–साथ मानव संसाधन विकास में भी अपनी भूमिका निभा रही है।

अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी

वैश्वीकरण और उदारीकरण की समकालीन दुनिया में आर्थिक सशक्तिकरण स्वतंत्र होने का सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ है। फंडिंग तक सीमित पहुँच के बावजूद व्यवसाय में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी आर्थिक विकास, रोजगार सृजन और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है। वर्षों से व्यावसायिक प्रयास पुरुषों से जुड़े रहे हैं जिससे महिलाओं के लिए अपनी क्षमताओं को प्रदर्शित करने के अवसर सीमित हो गए हैं। अब महिला उद्यमियों की भागीदारी बढ़ रही है। अर्थव्यवस्था में वह एक महत्वपूर्ण स्थान पर है और सक्रिय रूप से रोजगार सृजन कर रही है। आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में उनकी अहम भूमिका है। आज महिलाएं शिक्षा, स्वास्थ्य उपभोक्ता उत्पाद, ई–कॉमर्स प्रौद्योगिकी और कई अन्य क्षेत्रों में व्यापक समृद्धि का पोषण कर रही हैं। महिला उद्यमियों और निवेशकों की बढ़ती संख्या बेहतर आर्थिक भविष्य की ओर संकेत करते हैं। उद्यमिता से निवेश और कॉर्पोरेट नेतृत्व तक, महिलाएं न केवल अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है बल्कि सकारात्मक बदलाव भी ला रही है। उनकी अद्वितीय दृष्टिकोण, स्थिरता के प्रति प्रतिबद्धता और नवाचार को बढ़ावा देने की क्षमता अमूल्य संपत्ति है जो हम सभी को लाभान्वित करती है।

ग्रामीण स्तर पर बात की जाए तो हम पाते हैं कि कृषि कार्यों में अपनी भागीदारी के माध्यम से कृषि विकास, ग्रामीण विकास एवं खाद्य सुरक्षा, आदि में महिलाएं विशेष रूप से योगदान करती है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका के कारण ही महिलाओं को ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ कहा जाता है। इसके साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित होने वाले लघु एवं कुटीर उद्योगों में भी महिलाओं की प्रमुख भागीदारी होती है।

इसके अलावा अवैतनिक कार्य भी आर्थिक गतिविधि का एक महत्वपूर्ण पहलू है। व्यक्तियों परिवारों एवं समग्र अर्थव्यवस्था के विकास के लिए आवश्यक है। परंतु आर्थिक विश्लेषणों एवं निधि निर्माणों ने अवैतनिक कार्यों की उपेक्षा की है।1960 के दशक में नारीवादी अर्थशास्त्रियों के द्वारा महिलाओं के घरेलू श्रम को अर्थशास्त्र के क्षेत्र में शामिल करने और इसे भुगतान किए गए कार्य की तुलनीय कार्य के रूप में विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है। भारतीय अर्थव्यवस्था के नव–उदारवादी प्रतिमान में महिलाओं के काम की प्रकृति में महत्वपूर्ण बदलाव हुए हैं। बाजार उन्मुखीकरण ने भारत में महिलाओं के जीवन और आजीविका पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है। अतः भारतीय अर्थव्यवस्था समाज में अवैतनिक घरेलू काम को न तो पहचानने में सक्षम है और न ही इसे कम करने और पुनर्वितरित करने में सक्षम है।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने, जनवरी 2024 में, राष्ट्रीय महिला आयोग के स्थापना दिवस समारोह को संबोधित करते हुए कहा था कि, *"महिला सशक्तिकरण न केवल सामाजिक न्याय का मुद्दा है, बल्कि यह आर्थिक विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है।"* उन्होंने कहा की श्रम कार्यबल में महिलाओं की कम भागीदारी हमारे देश के समग्र विकास में एक बड़ी बाधा है। आज भारत दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और अब पांच खरब डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है। साथ ही, इस अवसर पर राष्ट्रीय महिला आयोग की पुस्तक "सशक्त नारी, सशक्त भारत" का विमोचन किया गया। वहीं, 21 सितंबर 2023 को नए संसद भवन में एक विशेष सत्र में महिला आरक्षण विधेयक पारित होने के अवसर पर उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने कहा था कि, *"महिलाएं सांसद और हमारे आर्थिक विकास की रीढ़ है, उनकी मौजूदगी के बिना देश सफलतापूर्वक नहीं चल सकता।"*

दुनिया भर में, महिला सशक्तिकरण और सामाजिक–आर्थिक प्रगति में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी ने ना केवल भारत में महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित किया है, बल्कि सकारात्मक बदलाव भी लाया है। अतः हाल ही की कई नीतियों से यह स्पष्ट होता है कि अर्थव्यवस्था में महिलाओं की उपस्थिति बढ़ी है। *बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना* और *पीएम मुद्रा योजना* जैसी कई योजनाएं हैं जो महिलाओं के विकास पर केंद्रित हैं। अतः इस तरह की पहल लैंगिक सशक्तिकरण में भारत के नेतृत्व को प्रदर्शित करता है। महिला श्रम बल भागीदारी दर में 04 प्रतिशत अंक की वृद्धि हुई है जिससे अब यह 37 प्रतिशत हो गई है। वहीं, मुद्रा योजना के परिणामस्वरूप महिलाओं के बीच वित्तीय समावेशन में काफी सुधार हुआ है। राष्ट्रीय डिजिटल साक्षरता मिशन और डिजिटल साक्षरता अभियान (दिशा) के तहत महिलाओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए लगभग 5.25 मिलियन लोगों को डिजिटल साक्षरता के लिए लक्षित किया गया जिसके लाभार्थियों में आशा और आंगनबाड़ी कार्यकर्ता शामिल हैं । इस प्रकार हम देखते हैं कि देश की अर्थव्यवस्था में भागीदारी के साथ आर्थिक विकास में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है।

आर्थिक विकास में बिहार की महिलाओं की भूमिका

बिहार की महिलाएं अपनी आर्थिक उन्नति एवं खुद को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के साथ –साथ देश एवं राज्य की अर्थव्यवस्था में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। बिहार की महिला उद्यमियों द्वारा लघु एवं कुटीर उद्योगों में निर्मित एवं बने उत्पादों को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में विशेष ख्याति प्राप्त है और इन उत्पादों की काफी मांग रहने से टर्नओवर में वृद्धि हुई है। उदाहरण के लिए, बिहार महिला उद्योग संघ महिलाओं एवं लड़कियों के आर्थिक सशक्तिकरण हेतु 1995 से सतत कार्यरत है जिसका उद्देश्य उद्यमियों की पहचान करना और उनके द्वारा उत्पादित उत्पादों को राष्ट्रीय –

अंतरराष्ट्रीय बाज़ार उपलब्ध करवाना है। परिणामस्वरूप संघ की स्थापना के पहले जिन उद्यमी की बिक्री नहीं के बराबर थी, आज लाखों का वार्षिक टर्नओवर है – जैसे विनायक भोग लड्डू, अथक सत्तू , अक्षत नमकीन, मिथिला पेंटिंग, आदि।

बिहार ग्रामीण आजीविका संवर्धन सोसाइटी, जिसे जीविका के नाम से भी जाना जाता है, ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार के तत्वावधान में एक पंजीकृत सोसाइटी है जो बिहार में ग्रामीण विकास में एक महत्वपूर्ण अध्याय है। इसका महिलाओं के जीवन पर एक परिवर्तनकारी प्रभाव पड़ा है। पिछले दशक की जीविका की यात्रा बिहार के बदलते स्वरूप के साथ मेल खाती है। वर्ष 2006 में 18 ब्लॉकों में एक छोटे पैमाने की परियोजना के रूप में शुरू हुई जीविका, वर्तमान में एक करोड़ से अधिक परिवारों के जीवन को प्रभावित करने वाले राज्यव्यापी आंदोलन में बदल गई है। जीविका का उद्देश्य ग्रामीण गरीब परिवारों को सामाजिक और आर्थिक दोनों तरह से सशक्त बनाना है। इसका उद्देश्य स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) और उनके संघों जैसे महिलाओं के संस्थानों को विकसित करके ग्रामीण गरीब परिवारों की आजीविका में सुधार करना है ताकि उन्हें बेहतर सेवाओं तक पहुंच मिल सके और स्वरोजगार के अवसर पैदा करने के लिए ऋण प्राप्त हो सके। जीविका के तहत आजीविका हस्तक्षेपों की एक श्रृंखला के माध्यम से, महिलाएँ अपने परिवारों की आर्थिक स्थिति में सुधार करने में सक्षम हुई हैं। बिहार देश का पहला राज्य बन गया है जहां महिलाओं द्वारा प्रबंधित 10 लाख स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) हैं। समूह 2007 से राज्य में महिलाओं को सशक्त बनाने और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए विश्व बैंक समर्थित गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम जीविका के तहत काम कर रहे हैं। आर्थिक सशक्तिकरण के अंतर्गत, महिलाओं की ऋण तक पहुँच बढ़ाने, उनकी आय बढ़ाने के लिए आजीविका के अवसर पैदा करने और औपचारिक क्षेत्र में रोजगार को बढ़ावा देने के लिए परियोजना के प्रयास शामिल हैं। आर्थिक रूप से सशक्त महिलाएँ अपने, अपने परिवार और स्थानीय तथा राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं के लिए बेहतर सामाजिक और आर्थिक परिणाम प्राप्त करने में सक्षम हैं।

इसके अलावा बिहार सरकार की कुछ महत्वपूर्ण योजनाएं एवं नीतियां भी हैं जो आर्थिक विकास में महिलाओं के योगदान को सुनिश्चित करने हेतु उन्हें सामाजिक एवं आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए क्रियान्वित की जा रही है। जैसे कि, पंचायती राज संस्थाओं और शहरी निकायों में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण ने एक सामाजिक क्रांति की नींव रखी क्योंकि इसका उद्देश्य महिलाओं को समान अधिकार, समान सामाजिक स्थिति और समान अवसर प्रदान करना था। सात निश्चय योजना में शामिल एक निश्चय 'आरक्षित रोजगार महिलाओं का अधिकार' के तहत सभी सरकारी नौकरियों में महिलाओं को 35% आरक्षण प्रदान किया गया है। महिला उद्यमी योजना के तहत ब्याज मुक्त ऋण की सुविधा है। मार्च 2015 में "बिहार राज्य महिला सशक्तिकरण नीति, 2015" लागू की गई। इसके अतिरिक्त मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना, मुख्यमंत्री कन्या उत्थान योजना, मुख्यमंत्री बालिका प्रोत्साहन योजना, सिविल सेवा प्रोत्साहन योजना और मेडिकल एवं इंजीनियरिंग कॉलेजों में स्त्रियों के लिए 33 प्रतिशत सीटों का आरक्षण, आदि इस दिशा में कुछ अन्य पहल हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि आर्थिक विकास में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए बिहार सरकार नीतियों एवं योजनाओं के माध्यम से महिलाओं को समग्र रूप से सशक्त बनाने की दिशा में प्रयासरत है।

निष्कर्ष

वर्तमान में महिलाएं कॉर्पोरेट क्षेत्रों में महत्वपूर्ण पदों का नेतृत्व कर रही हैं। साथ ही वह देश के विभिन्न क्षेत्रों में अपना योगदान कर रही हैं। एक अध्ययन में पाया गया कि समान कार्य अवसरों में 2025 तक भारत की जीडीपी में 18 प्रतिशत के उल्लेखनीय वृद्धि में योगदान करने की क्षमता है। वर्तमान में भारत की जीडीपी में महिलाओं की हिस्सेदारी 22 प्रतिशत है जो कि वैश्विक औसत 45 प्रतिशत से काफी कम है। देश के आर्थिक विकास में महिलाएं अग्रणी भूमिका में हैं। सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने और अर्थव्यवस्था में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए कई महत्वपूर्ण नीतियों एवं कार्यक्रमों का संचालन किया गया है तथा विभिन्न योजनाओं को लागू किया गया है। साथ ही विभिन्न राज्यों की सरकारों के द्वारा भी इस दिशा में पहल की गई है। अतः महिला सशक्तीकरण महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण पर निर्भर है और आर्थिक रूप से सशक्त महिलाएं आज समाज में नेतृत्वकर्ता की भूमिका में हैं, जो पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही है। बिहार में संचालित महिला उद्यमी संघ, जीविका एवं स्वयं सहायता समूह जैसी संस्थाएं इस दिशा में महत्वपूर्ण पहल है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि आज महिलाएं विभिन्न क्षेत्रों में अपना योगदान दे रही है और सामाजिक एवं आर्थिक सक्रियता के साथ देश एवं राज्यों की अर्थव्यवस्था एवं आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

सन्दर्भ सूची

- Ackah, C., Ahiadeke, C., & Fenny, A. P. (2009). Determinants of Female Labour Force. *Poverty Research Group, Economic and Social Research Council.*
- Amrit, Dr. R. (2020). Bihar's Poorest Women Are Changing Their Lives: A Case study of Bihar Rural Livelihoods Promotion Society (JEEViKA) Transforming lives of rural women through empowerment and entrepreneurship. *Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education, 17* (01), 424–431. https://ignited.in/index.php/jasrae/article/view/12649/25102
- Biswas, B., & Banu, N. (2022). Economic empowerment of rural and urban women in India: A comparative analysis. *Spatial Information Research.* https://doi.org/10.1007/s41324-022-00472-3
- Boserup, E. (1970). *Women's Role in Economic Development.* London: Allen and Unwin.
- Hill, C. (2011). Enabling rural women's economic empowerment: Institutions, opportunities and participation. In *Background paper prepared for the Expert Group Meeting on Enabling Rural Women's Economic Empowerment: Institutions, Opportunities and Participation, Accra, UN Women in Cooperation with FAO, IFAD, and WFP*
- How women's participation in business influences the economy | Explained. (2023, December 11). *India Today.* https://www.indiatoday.in/education-today/featurephilia/story/how-womens-participation-in-business-influences-the-economy-explained-2474500-2023-12-11
- Kabeer, N. (2001). *Discussing Women's Empowerment Theory and Practice.*

- कुमार , ए. (2024, मार्च 13). ओपिनियन : महिला सशक्तीकरण को समर्पित मोदी सरकार, विकास गाथा में बड़ा योगदान. *News18 हिंदी.* https://hindi.news18.com/amp/news/nation/narendra-modi-government-dedicated-to-woman-empowerment-women-cotnribution-in-development-journey-8144025.html
- प्रदीप. (2023, जनवरी 31). महिला सशक्तिकरण आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण : राष्ट्रपति मुर्मू. *पंजाब केसरी.* https://www.punjabkesari.in/national/news/women-empowerment-important-for-economic-development-president-murmu-1762915
- Reddy, N. D. (1979). Female Work Participation in India: Facts, Problems, and Policies. *Indian Journal of Industrial Relations. 15* (2):197–212.
- Singh, P., Pattanaik, F. (2020). Unfolding unpaid domestic work in India: women's constraints, choices, and career. Palgrave Commun 6, 111 https://doi.org/10.1057/s41599-020-0488-2
- Srivastava, N., & Srivastava, R. (2010). Women, work, and employment outcomes in rural India. *Economic and political weekly,* 49–63.
- https://www.biharmahilaudyogsangh.in/aim-objectives/